



सैय्यदना उसमान ग़नी रज़ि०





अश्फाक अहमद खां

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

उन्होंने हमेशा सबसे बढ़कर हिस्सा लिया। उन्हें अपने आका के यहां एक खास मकाम हासिल था। उनसे कल्बी व रूहानी तअल्लुक तो था ही....उनके साथ-साथ ऐसा रिश्ता भी था जिसकी बिना पर उनको "ज़ुन्नुरैन" कहा गया।

एमारत का मनसब संभाला तो हुकूमत की हदें और भी वसी होती गई उन्होंने पहली दफा बहरी बेड़ा तैयार करवाया। जिसकी बिना पर वह बहरे रूम की ज़बरदस्त बहरी ताकत बन गए। अवाम की फलाह व बहबूद के लिए उन्होंने बेशुमार इकदामात किए। उन इकदामात के नतीजे में हुकूमत मज़बूत हुई। मुल्क में खुशहाली आई और तरक्की के रास्ते खुले।

जब उनके खिलाफ साज़िशों का आगाज़ हुआ तो हर तरह की कोशिश, मसालिहत और मसलेहत के बावजूद यह फित्ना दब न पाया और बिल आखिर उनकी शहादत का सानेहा पेश आ गया। वह चाहते तो फौज को अपनी हिफाज़त के लिए तलब कर सकते थे। लेकिन महज़ अपनी ज़ात के लिए उन्होंने किसी को भी खून बहाने से मना कर दिया। तारीख में यह अपनी नवइत की वाहिद मिसाल है। अल्लाह तआला उन पर अपनी रहमतें नाज़िल करे। - आमीन

उनकी तमाम उम्र नेकी और भलाई के कामों में सर्फ हुई। बा-हया, सफाई पसन्द और इन्तिहाई इबादत गुज़ार थे। उनकी ज़ात के हवाले से एक मुफीद फिक्रअंगेज़ किताब, आपके मुताले के नज़र!

वस्सलाम

अब्दुल माजिद मुजाहिद

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मदीना एक सरसब्ज व शादाब इलाका था। लम्बी-लम्बी खजूरों के घने साए दूर से मुसाफिरों को अपनी तरफ खींचते थे। देखने वाले समझ जाते थे कि यह नखलिस्तान है और इनके कयाम के लिए एक मुनासिब और मौज़ू मकाम है। लेकिन यह भी नहीं था कि सारा इलाका ही सबज़े से ढका हुआ हो, कहीं-कहीं स्याह पत्थरों के पहाड़ भी थे। खित्त-ए-अरब का सहराई रंग कहीं-कहीं मदीने में भी देखने को मिल जाता था।

यह सरसब्ज़ व शादाब खित्ता हर मुआमले में खुश किस्मत वाके नहीं हुआ था, एक मुआमला ऐसा भी था जिस पर हर किसी को हैरत थी। इस पूरे इलाके में मीठे पानी की शदीद कमी थी। यहां मीठे पानी से मुराद यह नहीं है कि इसमें कोई मिठास घूली हुयी हो, बल्कि ऐसा पानी जो पीने के काबिल हो, इसमें तल्खी न हो, तुर्शी न हो और इतना नमकीन न हो कि पीने को दिल न चाहे। लोगों ने अपने तौर पर कुएं खोद कर पानी हासिल करने की कोशिश की लेकिन बदकिस्मती से वह पानी साफ और मीठा नहीं था। इस पूरे शहर में मीठे पानी का सिर्फ एक कुआं था जिसका नाम "बेरे रूमा" था। जिसका मालिक एक यहूदी था। वह किसी को इस कुएं के पास फटकने भी नहीं देता था। जो भी इस कुएं से पानी लेने की ख्वाहिश

करता, यहूदी पैसे लेकर उसे पानी देता था।

ऐसे में मुसलमान मक्का से हिजरत करके मदीना पहुंचे। कुछ ही अर्से में इन्हें भी इस संगीन मसले का एहसास हो गया। मीठा और साफ पानी नायाब था। जहां से पानी मिल सकता था वहां रूपये पैसे की ज़रूरत थी। रूपये पैसा उनके पास कहां था। वह तो अपना तमाम माल जायदाद और सामान मक्का में छोड़ आये थे। सिर्फ और सिर्फ ईमान की दौलत सीने से लगाए वह मदीना पहुंचे थे।

मुसलमान जब पानी के मुआमले में शदीद तकलीफ से दोचार हो गए तो उन्होंने रसूलुल्लाह स.अ.व. से इसकी शिकायत की। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने एलान फरमायाः

"जो शख्स इस कुएं को खरीद कर मुसलमानों के लिए पानी आम करेगा, उसके लिए जन्नत है।"

जन्नत की बशारत पाकर एक सहाबी चुपके से उठे और उस यहूदी के पास जा पहुंचे, यहूदी न सिर्फ कंजूस था बल्कि बहुत बुरी फितरत का भी मालिक था। उस सहाबी ने यहूदी से कहाः

"मैं यह कुआं खरीदना चाहता हूं।"

यहूदी ने हैरत से उस नवजवान को देखा। वह खूबसूरत, पाकीज़ा और बावकार शख्सीयत का मालिक नज़र आ रहा था। यकीनन वह मदीना का बासी नहीं था व गरना वह कभी यहूदी से इसका मुतालबा न करता। मदीने के सारे लोग यह जानते थे कि यह कुआं उसके लिए कारोबारी लिहाज़ से कितना मोफीद है और वह

उसको कभी नहीं बेचेगा। यहूदी ने उस नवजवान से कहाः

"यह कुआं बराए फरोख्त नहीं है।"

"देखो! तुम एक कारोबारी आदमी हो, कारोबार की बात करो!" सहाबी ने उसे समझाने की कोशिश की।

"इसी लिए तो कह रहा हूं कि कुआं नहीं बेचूंगा, मुझे इससे बहुत ज़्यादा मुनाफा मिलता है।" यहूदी ने कहा।

"मैं तुम्हें इससे दोगुना मुनाफा देने के लिए तैयार हूं।" सहाबी ने पेशकश की।

"फिर भी मुम्किन नहीं" यहूदी ने सख्ती से इंकार किया।

"अच्छा" सहाबी ने हैरत से उसे देखा "मैं तुम्हें इसकी मुंह मांगी कीमत देने के लिए तैयार हूं।"

यह पेशकश सुन कर यहूदी का मुंह खुले का खुला रह गया। उसके दिल पर एक लम्हे के लिए लालच ने गल्बा पा लिया। मुंह मांगी रकम लेकर कुआं बेचने का ख्याल उसके दिल व दिमाग को अपनी गिरिफ्त में ले रहा था।

लेकिन फिर ख्याल आया कि आज मुंह मांगी कीमत ले कर वह हमेशा के लिए कुएं के मुनाफा से महरूम हो जाएगा। चुनांचे लालच को दिल से निकाल कर उसने फैसला कर लिया और बोलाः

"मैं किसी भी कीमत पर यह कुआं नहीं बेचूंगा।"

गर्ज़ की उस सहाबी की हर कोशिश नाकामी से दोचार हुयी।

बिल आखिर एक नई तजवीज़ उसके ज़हन में आयी और वह यहूदी से मुखातिब हुए।

"ठीक है तुम सारा कुआं नहीं बेचना चाहते हो तो न बेचो! मुझे आधे कुएं का हिस्सेदार बना लो!"

"आधे कुएं का हिस्सेदार? बात यहूदी की समझ से बाहर थी, वह तअज्जुब से बोलाः

"कुएं का पानी आधा आधा कैसे हो सकता है।"

"पानी तकसीम नहीं हो सकता, लेकिन वह वक्त तो तकसीम हो सकता है।" सहाबी ने कहा।

"वह कैसे?" यहूदी ने कुछ समझते हुए कहा।

कुएं का पानी एक दिन तुम्हारी मिल्कियत होगा और दूसरे दिन मेरी मिल्कियत होगा।"

तब बात यहूदी की समझ में आ गई। यह एक मुनासिब तजवीज़ थी। इस यहूदी ने फौरन अन्दाज़ा लगा लिया कि अब सौदा करना मोफीद रहेगा चुनांच वह बारह हज़ार दिरहम में कुएं का आधा हिस्सा बेचने पर आमादा हो गया। बारह हज़ार दिरहम उस ज़माने में बहुत बड़ी रकम थी लेकिन उस सहाबी को अल्लाह तआला ने बहुत माल अता किया था उन्होंने रकम अदां करके आधा कुआं खरीद लिया।

यहूदी नहीं जानता था कि उसने कितना खसारे का सौदा किया है। हुआ यूं कि जिस दिन उस सहाबी की बारी होती थी उस दिन

मदीने के तमाम मुसलमान इतना पानी भर कर रख लेते थे कि दो दिन के लिए काफी हो जाता था। उस दिन कुएं से मुसलमान तो पानी लेते ही थे गैर मुस्लिमों के लिए भी कोई ममानियत नहीं थी। उन्हें भी मुसलमानों के साथ मुफ्त पानी लेने की इजाज़त थी। उसका नतीजा यह निकला कि जिस दिन यहूदी की बारी होती, उस दिन कोई भी पानी खरीदने के लिए न आता तब यहूदी को पछतावा हुआ। आधे कुएं की निगरानी के लिए बैठा रहता तंग आकर उस सहाबी से मज़ीद आठ दिरहम लेकर सारा कुआं उसके हवाले कर दिया। उस सहाबी ने वह कुआं मुसलमानों के लिए वक्फ कर दिया। किसी को कोई रोक टोक नहीं रही। अब मुसलमान जिस वक्त चाहते पानी ले सकते थे।

यह शख्सीयत जिन्होंने सखावत का बे मिसाल मोजाहेरा किया था जिन्होंने अपने गनी और दरया दिल होने का सबूत दिया था सहाबी सय्यदना उसमान रजि० थे। आप ५७६ में शहर मक्का में पैदा हुए। मां बाप ने उनका नाम उसमान रखा। इसी नाम से शोहरत मिली। आपके दो लकब बहुत मशहूर हुए। एक तो जुन्नुरैन यानी दो नूर वाला। दो नूर वाले से क्या मुराद है? यह हम आपको आगे चलकर बताएंगे। दूसरा लकब गनी है। आपका शुमार मक्के के ईमानदार और मुम्ताज़ ताजिरों में होता था। नेकी के कामों में बहुत खर्च करते थे। इसीलिए गनी के लकब से मशहूर हुए और यही लकब आपके नाम का हिस्सा बना।

पांचवी पुश्त में आपका सिल्सिल-ए-नसब रसूलुल्लाह स.अ.व. से जा मिलता है। आप कुरैश के कबीले बनू उमैया से तअल्लुक रखते थे। आपके परदादा का नाम उमैया था। नबी-ए-करीम स.अ.व. के परदादा का नाम हाशिम था। उमैया, हाशिम के भतीजे और अपने खानदान के सरबराह व रईस थे। इसी वजह से उनका खानदान बनू उमैया के नाम से मशहूर हुआ। इस खानदान के लोग उमवी कहलाते थे। कुरैश का कौमी झण्डा रखने का एज़ाज़ इसी ख़ानदान के पास था।

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने जब नबूवत का एलान किया उससे कब्ल ही सैयदना उस्मान रज़ि० के वालिद अफ्फान वफात पा चुके थे। आपकी वालिदा का नाम अरवा रज़ि० था और नानी उम्मे हकीम बैज़ा थीं। आपकी नानी रसूलुल्लाह स.अ.व. के वालिद मुहतरम अब्दुल्लाह की सगी बहन थीं। यूं बीवी अरवी रज़ि० रसूलुल्लाह स.अ.व. की फूफी ज़ाद बहन थीं और सैयदना उस्मान रज़ि० आप स.अ.व. के भांजे थे। आपका बचपन कैसे और किस तरह गुज़रा तारीख की किताबों में इसका ज़िक्र बहुत कम मिलता है। अल्बत्ता आपके किरदार और शख्सियत को देखते हुए इस बात का अन्दाज़ा होता है कि आपका बचपन बहुत पाकीज़ा गुज़रा आपकी फितरत में हया थी। घर वालों ने आपकी बहुत उम्दा तरबियत की और लिखना पढ़ना सीखाया। इसी तरबियत का नतीजा था कि सच्चाई, ईमानदारी और सिद्क, सैयदना उस्मान रज़ि० की ज़ात की नुमाया खूबियां बन गयीं।

सैयदना उस्मान रज़ि० जवान हुए तो उन्होंने मआश के लिए तिजारत के पेशे को पसन्द किया। उन्होंने गल्ले की तिजारत शुरू कर दी ईमानदार तो थे ही, इस खूबी ने उनके कारोबार को चार चांद लगा दिए। कारोबार जम गया और जल्द ही मक्का के दौलत मन्द ताजिरों में उनका शुमार होने लगा। लेकिन वह मक्के के आम ताजिरों की तरह नहीं थे। इतने ज्यादा माल व दौलत का मालिक होने के बावजूद उनमें कोई खराबी नहीं पैदा हुई। उस ज़माने में शराब पीने का आम रिवाज था। वह बहुत कम लोग इस बुराई से बचे हुए थे, लेकिन उन्होंने कभी शराब को हाथ नहीं लगाया। उन्होंने अपनी दौलत को कभी फजूल कामों में खर्च नहीं किया। तबियत में नेकी थी, इसलिए खुद भी बढ़ चढ़ कर नेकी के कामों में हिस्सा लेने लगे। अपनी इन्हीं खूबियों की बिना पर उनका शुमार मक्के के मुमताज़ और मुअज़्ज़ज़ ताजिरों में होने लगा था।

रसूलुल्लाह स.अ.व. भी चूंकि तिजारत करते थे, इसलिए सैयदना उस्मान रज़ि० से उनके तअल्लुकात बहुत दोस्ताना थे। वैसे भी रिश्ते के लिहाज़ से वह आप स.अ.व. के भांजे थे, इसलिए बाहमी एहतिराम का रिश्ता भी कायम था। सैयदना उस्मान रज़ि० ३४ साल के थे कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अपने नबी होने का एलान फरमा दिया। नबूवत के पहले साल गिनती के चन्द ही लोगों ने इस्लाम कबूल किया था। उन नेक लोगों में सैयदना उस्मान रज़ि० की खाला सादी रज़ि० भी शामिल थीं। आप एक दिन उनके यहां गए तो

उन्होंने कहाः

''भांजे! बेशक मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह के सच्चे रसूल हैं उन पर कुरआन नाज़िल होता है और वह अल्लाह की तरफ बुलाते हैं, उनका दीन कबूल करने ही में बेहतरी है।''

खाला की बातें सुनकर सैयदना उस्मान रज़ि० के दिल पर असर हुआ वह खुद भी नबी-ए-करीम स.अ.व. की ज़ाते गिरामी से अच्छी तरह आगाह थे। तमाम खूबियां उन पर वाज़े थीं ऐसे में सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० से उनकी मुलाकात हो गयी उनसे अपनी खाला की बातों का ज़िक्र किया तो उन्होंने फरमायाः

''अल्लाह की कसम! जो कुछ तुम्हारी खाला ने कहा है वह बिल्कुल सच है।''

इसके बाद सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने भी इस्लाम की खूबियां बयान की। उनकी बातें सुनकर सैयदना उस्मान रज़ि० का दिल मोम हो गया। नबी-ए-करीम स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए और फौरन कलमा पढ़कर अपना हाथ रसूलुल्लाह स.अ.व. के हाथ में दे दिया।

सैयदना उस्मान रज़ि० के चचा हकम बिन अबी आस को जब उनके इस्लाम कुबूल करने का इल्म हुआ तो बहुत आग बगोला हुआ। वह सैयदना उस्मान रज़ि० को रस्सीयों से जकड़कर मारने पीटने लगा और कहने लगाः

''भतीजे! मैं कहता हूं नया मज़हब छोड़ दो।''

सैयदना उस्मान रज़ि० ने बड़े सब्र और हौसले के साथ चचा का तशद्दुद बर्दाश्त किया और हर बार उनके मुताबले के जवाब में यही कहाः

''जो चाहो कर लो! इस्लाम को हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा।''

चचा मार-मार कर थक गया, लेकिन उनके हौसले को न तोड़ सका। बिल आखिर चचा ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया। यह जुल्म व सितम सिर्फ अपनो ही की तरफ से नहीं था मक्के के दूसरे काफिर भी उन्हें सताते रहे। उनकी तरह दूसरे मुसलमान भी इसी तरह जुल्म की चक्की में पिस रहे थे। उन पर तकलीफों के पहाड़ तोड़े जा रहे थे। जब जुल्म हद से बढ़ गया तो रसूलुल्लाह स.अ.व. ने मुसलमानों से फरमायाः

''तुम लोग यहां से निकल कर हबशा चले जाओ, वहां का बादशाह अच्छा आदमी है, किसी पर जुल्म नहीं होने देता। जब तक अल्लाह तुम्हारी इस मुसीबत को दूर नहीं कर देता, तुम वहीं ठहरो।''

नबी-ए-करीम स०व०अ० के इस फरमान के बाद सहाबा-ए-किराम रज़ि० के एक गिरोह ने मक्के की ज़मीन को छोड़ा और हब्शा की जानिब हिजरत की। इस गिरोह में १२ मर्द और ४ औरतें शामिल थीं। सैयदना उस्मान रज़ि० उनके अमीर थे। सैयदना उस्मान रज़ि० के हमराह उनकी बीवी सैयदा रूकैया रज़ि० भी थीं। हब्शा, बर्रेआज़म अफरीका का मुल्क था, जो समुन्द्र से पार अरब के जुनूब मग़रिब में वाके था। आज कल यह मुल्क इथोपिया कहलाता है। इस ज़माने में

हब्शा के बादशाह को नज्जाशी कहा जाता था, हब्शा के बादशाह का तअल्लुक अगरचा ईसाई मज़हब से था लेकिन फितरी तौर पर वह नेक दिल और इंसाफ पसंद हुकमरां था। इसके बारे मेंनबी-ए-करीम स.अ.व. ने जो कुछ फरमाया था वह बिल्कुल दुरूस्त था। सैयदना उस्मान रज़ि० की यह हिजरत एक लिहाज़ से बहुत तारीखी अहमियत रखती थी। दीन की खातिर अपना प्यारा वतन और घरबार छोड़ना और किसी दूसरी जगह जाकर सुकूनत इख्तियार करना हिजरत कहलाता है। यह बहुत बड़ी कुरबानी होती है और उसका बहुत ज़्यादा सवाब मिलता है।

हब्शा में यह मुसलमान बड़े सुकून के साथ रहे। वहां न उनकी इबादत पर पाबन्दी थी और न दीन के हवाले से कोई रोक टोक। वह आज़ादाना हर काम करते थे। उन्हें वहां आए अभी तीन माह भी न हुए थे कि उनको यह खबर मिली कि मक्के के सभी काफिरों ने इस्लाम कबूल कर लिया है। यह खबर सुनकर उनके दिलों में खुशी व इतमिनान की लहर दौड़ गयी और वह मक्के की तरफ लौट आए। मक्का पहुंचने पर उन्हें इल्म हुआ कि जो खबर उन तक पहूंची थी वह सरासर झूठ थी, लेकिन अब क्या हो सकता था, वह तो लौट आए थे। उन्होंने हब्शा वापस जांना मुनासिब न समझा। और मक्के के सरादारों में से किसी न किसी की पनाह हासिल करके मक्के में दाखिल हो गए।

मक्के की सर ज़मीन पर मुसलमानों को इसी तरह अज़ीयतों का

सामना था। क्या गुलाम क्या आज़ाद, क्या अमीर और क्या गरीब, सभी काफिरों के सितम का निशाना बन रहे थे। जब काफिरों की सख्तियां हद से बढ़ गयी और मुसलमानों का जीना दुशवार हो गया तो अगले साल नबी-ए-करीम स.अ.व. ने फिर हिदायत फरमाई कि मुसलमान हब्शा की तरफ हिजरत कर जाएं।

इस मरतबा हिजरत करने वालों गिरोह में १०२ मुसलमान मर्द और औरतें शामिल थीं। उनमें भी सैयदना उस्मान रज़ि० और सैयदा रूकैया रज़ि० शामिल थे। इस तरह उन्हें दूसरी दफा दीन की खातिर हिजरत करने का एज़ाज़ हासिल हुआ। सफर की तकलीफें बर्दाश्त करते यह लोग बिल आखिर हब्शा पहुंच गए। वहां उनके लिए अमन व सुकून और चैन था।

मुसलमानों की यह हिजरत मुसलमानों के लिए तो सुख लाई थी लेकिन मक्के के काफिरों के लिए बे सुकूनी और दुःख का बाइस बनी थी। मुसलमान आराम व सुकून से रहें, वह यह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। उन्होंने अपने आदमी भेज कर नज्जाशी को इस बात पर आमादा करने की कोशिश की कि वह मुसलमानों को उनके हवाले कर दे, लेकिन उसने काफिरों के साथ-साथ मुसलमानों की भी पूरी बात सुनी और उसने फैसला दिया कि मुसलमान वहीं रहेंगे। उन्हें उनके हवाले नहीं किया जा सकता। इस तरह नज्जाशी की ताईद व हिमायत से यह लोग कई साल तक यहीं रहे।

नबूवत का तेरहवां साल था। उन हिजरत करने वालों में से

बेशतर वापस आ चुके थे। मक्के के मुशरिक इसी तरह मुसलमानें का जीना हराम किए हुए थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने मुसलमानों को हिदायत की कि वह हिजरत कर के यसरिब चलें जाएं। क्योंकि वहां के बहुत से लोग मुसलमान हो चुके थे। वह आप स.अ.व. को यसरिब आने की दावत भी दे चुके थे। और उन्होंने इस अज़्म का भी इज़्हार किया था कि वह मरते दम तक आप स.अ.व. की हिफाज़त और मदद करेंगे। इन लोगों की इसी मदद और हिमायत की बिना पर उनको अंसार यानी मददगार कहा गया। आप स.अ.व. ने उन लोगों की दावत कुबूल फरमाकर अपने साथियों को हिजरत की दावत दे दी। मुसलमान यके बाद दीगर हिजरत करते गए और देखते ही देखते मक्का मुकर्रमा मुसलमानों से खाली होने लगा। बस गिनती के चन्द ही मुसलामन बचे थे। उन हिजरत करने वालों में सैयदना उस्मान रज़ि०, सैयदा रूकैया रज़ि० और उनके बेटे अब्दुल्लाह भी शामिल थे। अब्दुल्लाह हब्शा में पैदा हुए थे।

मुसलमानों को हिजरत किए अभी दो साल ही हुए थे कि बद्र का मारका पेश आ गया। सैयदना उस्मान रज़ि० उस वक्त सैयदा रूकैया रज़ि० की बीमारी के बाइस उनकी तीमार दारी में मसरूफ थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने सैयदा रूकैया की बीमारी की शिद्दत को महसूस करते हुए सैयदना उस्मान रज़ि० से फरमायाः

"तुम यहीं रहो! तुम्हें उस शख़्स के बराबर सवाब मिलेगा जो लड़ाई में शरीक होगा। तुम रूकैया की तीमारदारी करो।" आप स.अ.व. ने सैयदना उस्मान रज़ि० की मदद के लिए अपने एक

करीबी सहाबी सैयदना ओसामा बिन ज़ैद रज़ि० को मदीने में छोड़ा ताकि वह तीमारदारी में उनका हाथ बटा सके। गज़व-ए बद्र में मुसलमानों को अल्लाह तआला ने कामयाबी से नवाज़ा। जिस रोज़ फतह हासिल हुई, उसी दिन बीमारी के सबब सैयदा रूकैया रज़ि० का इन्तेकाल हुआ। उनका इन्तेकाल सैयदना उस्मान रज़ि० के लिए तो एक अज़ीम सदमे का बाइस था ही, रसूलुल्लाह स.अ.व. को भी उनके इन्तेकाल पर शदीद दुखः हुआ, आपकी आँखों से आंसू जारी हो गए। क्योंकि सैयदा रूकैया रज़ि० आपकी साहबज़ादी थीं। रसूलुल्लाह स.अ.व. बेटी की कब्र पर तशरीफ ले गए और उनके लिए दुआ की।

सैयदा रूकैया रज़ि० की वफात ने सैयदना उस्मान रज़ि० को बहुत गमगीन कर दिया था। अफसोस की हालत में उनकी ज़ुबान से यही कलमा निकलता थाः

"अफसोस! रसूलुल्लाह स.अ.व. से मेरा रिश्ता टूट गया।"

रसूलुल्लाह स.अ.व. सैयदना उस्मान रज़ि० से बहुत दिली लगाओ रखते थे, उनसे बड़ी मुहब्बत करते थे। सैयदना उस्मान रज़ि० की हालत आप स.अ.व. से देखी न गई। चुनांच दूसरी बेटी सैयदा उम्मे कुलसूम रज़ि० की शादी भी सैयदना उस्मान रज़ि० से कर दी। यही सबब था कि आपको ज़ुन्नूरैन यानी दो नूर वाला कहा गया।

हिजरत का तीसरा साल था। कुफ्फारे मक्का जो बद्र के मआरके

में शिकस्त का ज़ख्म खाए हुए थे, भरपूर तैयारियों के साथ दोबारा उहुद के मैदान में जंग के लिए पहुंच गये। दूसरे सहाबा के साथ सैयदना उस्मान रज़ि० ने भी इस गज़वे में बड़ी दिलेरी और बहादुरी का मुज़ाहिरा किया जब रसूलुल्लाह स.अ.व. के हुक्म की खिलाफ वरज़ी करते हुए दर्रे पर मुतअय्यन तीर अन्दाज़ों ने दर्रे खाली छोड़ दिया तो काफिरों को उस तरफ से हमला करने का मौका मिल गया। मुसलमान अपनी तरफ से काफिरों को शिकस्त देकर माले गनीमत समेटने में मसरूफ थे। इस अचानक हमले ने उन्हें बदवहास कर दिया और उनके कदम उखड़ गए। बहुत से सहाबा-ए-किराम शहीद हो गए। उसके साथ-साथ नबी-ए-करीम स.अ.व. की शहादत की खबर भी फैल गई यह खबर मुसलमानों के आसाब पर बिजली बन कर गिरी और वह सदमें से हौसला हार बैठे करीब था कि कुफ्फार की तलवारों की ज़द में आकर मुसलमानों का खातमा हो जाता, कुछ सहाबा की नज़र रसूलुल्लाह स.अ.व. पर पड़ गई सब आपकी तरफ दौड़ पड़े उनमें सैयदना उस्मान रज़ि० भी शामिल थे।

गज़वे खन्दक में जिन सहाबा को खन्दक की हिफाज़त की ज़िम्मे दारी सौंपी गई उनमें सैयदना उस्मान रज़ि० का नामे गिरामी भी था। रसूलुल्लाह स.अ.व. सैयदना उस्मान रज़ि० से बेइन्तेहा मुहब्बत रखते थे। उसका एक सुबूत तो यही था कि आप स.अ.व. ने अपनी दोनों बेटियों की शादी उनसे की। सुलह हुदैबिया के मौका पर उनकी ज़ात की खातिर लड़ने मरने का अहद भी कुछ कम अहम नहीं था। हिजरत के छठे साल नबी-ए-करीम स.अ.व. १४०० सहाबा-ए-किराम रज़ि० के साथ काबे की ज़ियारत के लिए मक्के की तरफ रवाना हुए। क्योंकि हिजरत के बाद से लेकर अबतक वह मक्के नहीं जा सके थे। सैयदना उस्मान रज़ि० भी साथ थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. और सहाबा-ए-किराम की नियत उमरा करने की थी।

कुरैश-ए-मक्का को पता चला कि मुसलमानों का काफिला मक्के की तरफ आ रहा है। तो उन्होंने यह अहद कर लिया कि मुसलमानों को किसी तौर पर भी मक्के में दाखिल नहीं होने देंगें। उन्होंने एलान कर दिया कि उनका रास्ता रोका जाएगा। उनमें से बहुत से लोग हथियार उठा कर मुसलमानों का रास्ता रोकने के लिए निकल आए। रसूलेकरीम स.अ.व. को भी इसकी खबर मिल गई। आप स.अ.व. ने रास्ता बदल लिया क्योंकि मुसलमान जंग के इरादा से बिल्कुल नहीं आए थे। मुसलमान रास्ता बदल कर मक्के से चन्द मील दूर हुदैबिया के मकाम पर पहुंच गए। वहां क्याम पज़ीर होकर आप स.अ.व. ने कुरैश को पैगाम भेजा:

"हम लड़ने नहीं आए बल्कि सिर्फ काबे की ज़्यारत के लिए आए हैं, उमरा करने के बाद हम वापस मदीने चले जाएंगे।"

कुरैश को जब यह पैगाम मिला तो उन्होंने आपस में मश्वरे के बाद ताएफ के एक रईस उरवा बिन मसऊद रज़ि० जिन्होंने बाद में इस्लाम कबूल कर लिया था, को बातचीत के लिए भेजा। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उनसे भी यही कहा कि हम लड़ने के इरादे से नहीं आए हैं। सिर्फ उमरा करना चाहते हैं। इस मुलाकात के दौरान उरवा बिन

मसऊद रज़ि० ने सहाबा-ए-किराम का रसूलुल्लाह स.अ.व. के साथ एहतराम और मुहब्बत का जो रिश्ता देखा उसे देख कर वह दंग रह गया। जब वह वापस कुरैश के पास पहुंचा तो हैरत के आलम में कहने लगाः

"मैं दुनियां के बड़े-बड़े बादशाहों के दरबार में गया हूं। मैंने कैसर का दबदबा भी देखा है और किसरा का शानोशौकत भी, नज्जाशी की सच्चाई और हैबत भी मैंने अपनी आंखों से देखी है। लेकिन जितना इज्ज़त व इहतिराम मैंने मुहम्मद स.अ.व. का उनके साथियों को करते देखा है, किसी बादशाह की इतनी इज्ज़त नहीं देखी। मेरे ख्याल में तो बेहतर यही है कि तुम मुसलमानों से सुलह कर लो।"

लेकिन कुरैश भला कब मानने वाले थे। उन्होंने उरवा बिन मसऊद रज़ि० की बात पर गौर ही नहीं किया। जब कुरैश की तरफ से कोई जवाब न आया तो नबी-ए-करीम स.अ.व. ने फिर एक कासिद उन के पास भेजा। कुरैश ने उस कासिद के साथ इन्तिहाई बुरा सुलूक किया तब आप स.अ.व. ने सैयदना उस्मान रज़ि० को भेजा, क्योंकि उन्हें मक्के के मुआशरे में जो मकाम और अहमियत हासिल थी, उसके पेशे नज़र यह यकीन था कि कुफ्फारे मक्का उनके साथ बदसुलूकी नहीं करेंगे। सैयदना उस्मान रज़ि० के हाथ रसूलेकरीम स.अ.व. ने यह पैगाम भेजाः

"हम जंग के लिए नहीं आए, बल्कि काबे की ज़ियारत के लिए आए हैं और कुरबानी के जानवर साथ लाए हैं। तवाफ और कुरबानी करके हम वापस चले जाएंगे।"

सैयदना उस्मान रज़ि० के अहले कुरैश से अच्छे तअल्लुकात थे। फिर उनके मकाम और मरतबे को देखते हुए उन्हें यह पेशकश की गईः

"आप उमरा कर लें, हम दूसरे मुसलमानों को मक्के में दाखिल नहीं होने देंगे।"

सैयदना उस्मान रज़ि० ने नफी में जवाब दिया और कहाः

"मैं रसूलुल्लाह स.अ.व. और दूसरे मुसलमानों के बगैर उमरा नहीं करूंगा।"

तैश में आकर काफिरों ने उन्हें मक्के ही में रोक लिया। इधर मुसलमानों में यह खबर फैल गई कि सैयदना उस्मान रज़ि० शहीद कर दिए गए हैं। सैयदना उस्मान रज़ि० चूंकि वापस तशरीफ नहीं लाए थे इसलिए मुसलमानों को भी इस खबर पर यकीन हो गया। उन्हें शदीद सदमा हुआ। गुस्से के आलम में सब कुरैश से बदला लेने के लिए तैयार हो गए हांलांकि वह इस वक्त लड़ाई की हालत में नहीं थे। न उनके पास लड़ाई का कुछ सामान था, न तलवारें और घोड़े तादाद में भी सिर्फ चौदह सौ थे। इधर दुशमन अपने घर में था। पूरी तैयारी के साथ उन पर हमलाआवर हो सकता था। लेकिन उनका एतेमाद और भरोसा तो सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात पर था। आप स.अ.व. बबुल के एक दरख्त के नीचे अपने तमाम सहाबा से बैअत

ली कि उस्मान का बदला लेने के लिए लड़ेंगे और मरते दम तक पीछे नहीं हटेंगें। सैयदना उस्मान रज़ि० की तरफ से आप स.अ.व. ने खुद अपने एक हाथ पर दूसरा हाथ रख कर बैअत ली। इससे मुराद यही थी कि आप स.अ.व. ने अपने दूसरे हाथ को सैयदना उस्मान रज़ि० का हाथ करार दिया और खुद फरमायाः

"यह उस्मान का हाथ है।"

यह बैअत "बैअते रिज़वान" कहलाई, क्योंकि अल्लाह तआला ने उसमें शरीक होने वालों से अपने राज़ी होने का एलान फरमाया। ये एलान कुरआने करीम की सूरः अलफतह में हैः

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ (الفتح:١٨)

"यकीनन अल्लाह मोमिनों से खुश हो गया जबकि वह दरख्त के नीचे आप से बैअत कर रहे थे।"

गोया जिन लोगों ने उस वक्त बैअत की अल्लाह उनसे खुश हो गया। इसी लिए नबी-ए-करीम स.अ.व. ने सैयदना उस्मान रज़ि० की शहादत की खबर के बावजूद अपने एक हाथ को सैयदना उस्मान रज़ि० का हाथ करार देकर उन्हें इस बैअत में शामिल कर लिया था। ताकि शहादत का मरतबा पाकर वह भी उन लोगों में शामिल हो जाएं जिनसे अल्लाह राज़ी हो गया। बैअत के बाद मुसलमान जोश व खरोश के साथ लड़ाई की तैयारी में मसरूफ थे कि सैयदना उस्मान रज़ि० सही सलामत वापस तशरीफ ले आए उन्हें ज़िन्दा देख कर मुसलमान बहुत खुश हुए। इधर मुसलमान जिस तरह लड़ने और

कटने मरने के लिए तैयार हो गए उस जज़बे को देख कर काफिर मुसलमानों से सुलह करने पर आमादा हो गए। चुनांचे उन्होंने सुलह के चन्द शरायत पेश कीं। एक मुआहेदा लिखा गया जो सुलह हुदैबिया के नाम से मशहूर हुआ।

मुआहेदे की दीगर शरायत के साथ-साथ एक शर्त यह भी थी कि इस साल मुसलमान उमरा किए बगैर वापस चले जाएं अगले साल ज़िकादा के महीने में कुरैश तीन दिन के लिए मक्का से निकल जाएंगे मुसलमान उन दिनों में उमरा कर लें। इस मुआहेदे के बाद आप स.अ.व. तमाम सहाबा के साथ वापस चले गए।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० खैबर की लड़ाई में भी शरीक हुए। फतहे मक्का के वक्त भी आप रसूलुल्लाह स.अ.व. के हमराह थे। हुनैन और तबूक की जंगों में भी आपने शिरकत फरमाई। गज़्व-ए-तबूक से वापसी पर सैयदा उम्मे कुलसूम रज़ि० चन्द दिन बीमार रहकर वफात पा गयीं इस सानेहा पर रसूलुल्लाह स.अ.व. और सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को शदीद सदमा पहूंचा।

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने हज्जतुलविदा में तारीखी खुतबा दिया। इससे अगले साल आप स.अ.व. ने वफात पायी दूसरे मुसलमानों की तरह सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को भी यकीन नहीं आता था कि ऐसा भी हो सकता है। नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात के बाद सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने दो साल तीन माह और ग्यारह दिन खिलाफत की ज़िम्मेदारी निभाई उनकी वफात के बाद सैयदना

उमर रज़ि० दूसरे खलीफा बने। उनकी खिलाफत दस साल छः महीने और पांच दिन रही, फिर वह शहीद कर दिए गए।

उन दोनों खुलफा के पूरे दौरे हुकूमत में सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को अपनी नेकी, परहेज़गारी और दीन के लिए खिदमत की बिना पर एक मुमताज़ मकाम हासिल रहा। रसूलुल्लाह स.अ.व. से आपके करीबी रिश्ते की वजह से आपकी बहुत ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी। दोनों खुलफा ने अहम मुआमलात में उनसे मशवरे किए। सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० तो अपने फरमान आपसे लिखवाते थे। बारह हिजरी में सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने हज के लिए जाते वक्त मदीने में अपना कायम मुकाम सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को बनाया। सैयदना उमर की खिलाफत के बारे में सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने फौरन फरमा दिया थाः

"उमर जैसा हममें कोई नहीं।" उनका मतलब था कि खिलाफत सैयदना उमर रज़ि० का हक है।

सैयदना उमर रज़ि० ने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को अपनी मजलिसे शुरा का मिम्बर बनाया। उनके मशवरों को बड़ी कद्र की निगाह से देखा। शरई फतवे जारी करने वालों में सैयदना उस्मान गनी रज़ि० भी शामिल थे।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० मुसलमान होने से पहले भी नेकी के कामों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया करते थे। मुसलमान होने के बाद उनकी सखावत का रंग और भी तेज़ हो गया। वह मुहताजों यतीमों

और बेवाओं की मदद करते थे। मुसीबत में मुसलमानों के काम आते थे। मदीना में "बेरे रूमा" नामी कुएं को खरीद कर उन्होंने मुसलमानों के लिए वक्फ कर दिया था ताकि उनके लिए पानी की किल्लत खत्म हो सके। एक दफा जब सैयदना उमर के दौर में शदीद कहत पड़ा एक सौदागर गल्ले से लदे हुए एक हज़ार ऊंट लेकर मदीने आया, सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने उससे सारा गल्ला खरीद लिया मदीने के ताजिरों को उसकी खबर हुई तो वह अनाज खरीदने के लिए आ गए। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने फरमायाः

"मैं तो गल्ला उसके हाथ फरोख्त करूंगा जो मुझे दस गुना मुनाफा देगा।"

अब कौन था जो इतना मुनाफा दे पाता, लोग मायूस होकर लौट गए। उनके जाने के बाद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने पूरे मदीने में एलान करवा दिया कि जिस शख्स को जितने गल्ले की ज़रूरत है वह आकर मुफ्त ले जाए। इस एलान के बाद लोगों ने हैरत से दरयाफ्त कियाः

"आप तो कहते थे कि मैं गल्ला दस गुना मुनाफा पर फरोख्त करूंगा लेकिन आपने तो सारा गल्ला मुफ्त दे दिया।"

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने फरमायाः

"अल्लाह तआला का वादा है कि वह एक नेकी के बदले दस नेकियों का सवाब देगा। इसलिए मैंने यह अनाज अल्लाह के नाम पर ज़रूरत मन्दों में तकसीम कर दिया। मुझे उम्मीद है कि मेरे खर्च किए

हुए हर दिरहम के बदले में अल्लाह तआला मुझे दस दिरहम खर्च करने का सवाब देगा।''

गज़्व-ए-तबूक के मौके पर रसूलुल्लाह स.अ.व. ने शाहे रूम से मुकाबले के लिए इर्द गिर्द से भी मुसलमानों को मदद के लिए बुला लिया इस तरह एक बड़ा लशकर तैयार हो गया। लेकिन इतने बड़े लशकर के खुराक, हथियार, सवारियों और दीगर साजो समान का मसला था। इस लिए आप स.अ.व. ने मुसलमानों से फरमायाः

''इस नेक मकसद के लिए दिल खोलकर चन्दा दें ऐसा करने वालों के लिए जन्नत है।''

मुसलमानों ने इस मौके पर बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। सैयदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० घर का सारा सामान ले आए। सैयदना उमर रज़ि० घर का निस्फ सामान ले आए। सैयदना अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० ने चालीस हज़ार दिरहम दिए।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने तिजारत की गर्ज़ से मुल्के शाम भेजने के लिए एक काफिला तैयार किया था जिसमें पालान और कजावे समेत दो सौ ऊंट थे। तकरीबन तीस किलो के करीब चांदी थी। उन्होंने यह सब अल्लाह की राह में सदका कर दिया। इसके बाद भी तबियत को इतमिनान न हुआ तो फिर सौ ऊंट पालान और कजावे समेत सदके कर दिए। फिर भी दिल न माना तो एक हज़ार दिनार जो तकरीबन साढ़े पांच किलो सोने के बराबर थे, नकद लेकर रसूलुल्लाह स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्हें रसूलुल्लाह

स.अ.व. की आगोश में बिखेर दिया।

रसूलुल्लाह स.अ.व. उन्हें उलट पलट कर देखते जाते और फरमाते जातेः

''आज के बाद उस्मान जो भी करें उन्हें नुकसान न होगा।''

उसके बाद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने मज़ीद सदका किया, यहां तक कि उनके सदके की मिकदार नकद रकम के अलावा नौ सौ ऊंट और सौ घोड़ों तक जा पहुंची।

मस्जिद-ए-नबवी इबतिदा में बहुत छोटी थी। मुसलमानों की तादाद बढ़ गई तो रसूलुल्लाह स.अ.व. ने इरादा फरमाया कि साथ वाली ज़मीन मस्जिद के लिए खरीद ली जाए। आप स.अ.व. ने फरमायाः

''कोई है जो इस ज़मीन को खरीद कर मस्जिद में शामिल कर दे और बदले में जन्नत ले ले।''

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० यह सुनते ही फौरन आगे बढ़े और दस हज़ार दिरहम में ज़मीन खरीद कर मस्जिद के लिए पेश कर दी।

आपकी सखावत अपनी इन्तिहा को पहुंची हुई थी, बल्कि आप अल्लाह तआला के इस फरमान के अमली तस्वीर थेः

الَّذِيۡنَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالۡكَاظِمِيۡنَ الۡغَيۡظَ وَالۡعَافِيۡنَ
عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الۡمُحۡسِنِيۡنَ (آل عمران:۱۳۴)

"जो लोग तंगी और फराखी में खर्च करते हैं और गुस्सा पी जाते हैं और लोगों से दर गुज़र करते हैं और अल्लाह तआला नेकी करने वालों को पसन्द करता है।"

एक मरतबा रसूलेकरीम स.अ.व. के घर में चार दिन से कुछ नहीं पका था। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को खबर हुई तो फौरन बहुत सा आटा, खजूरें, एक बकरा और तीन सौ दिरहम लेकर आप स.अ.व. के घर पहुंचे, उस वक्त नबी-ए-करीम स.अ.व. घर में नहीं थे। उन्होंने यह चीज़ें सैयदा आयशा रज़ि० के हवाले कीं। थोड़ी देर बाद कुछ रोटियां और भुना हुआ गोश्त भी दे आए। नबी-ए-करीम स.अ.व. घर तशरीफ लाए तो सैयदा आयशा सिद्दीका रज़ि० ने आप स.अ.व. को बताया कि उस्मान रज़ि० यह सामान दे गए हैं। आप स.अ.व. यह सुन कर घर नहीं ठहरे फौरन मस्जिद में तशरीफ ले गए और हाथ उठाकर यह दुआ मांगीः

"ऐ अल्लाह! मैं उस्मान से राज़ी हो गया तू भी उस्मान से राज़ी हो जा।"

यह अल्फाज़ आप स.अ.व. ने तीन बार दोहराए।

जब सैयदना उमर फारूक रज़ि० एक ईरानी गुलाम अबू लूलू फिरोज़ के हाथों शदीद ज़ख्मी हो गए और उनके बचने की कोई उम्मीद न रही तो उन्होंने छः सहाबा-ए-किराम के नाम तजवीज़ किए कि उनमें से किसी एक को खलीफा चुन लेना। उन छः सहाबा में सैयदना उस्मान गनी रज़ि०, सैयदना अली, सैयदना तलहा, सैयदना

जुबैर, सैयदना अब्दुर्रहमान बिन औफ और साद बिन अबी वक्कास रज़ि० शामिल थे। सैयदना उमर रज़ि० की वफात के बाद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को खलीफा चुन लिया गया।

जब आप खलीफा मुनतखब हुए तो आपकी उमर ७० बरस से ज़ायद थी। आप तकरीबन बारह साल तक खिलाफत की ज़िम्मेदारी निभाते रहे। सैयदना उमर फारूक रज़ि० के दौर में फतूहात का जो अज़ीमुश्शान सिलसिला शुरू हुआ था आपने न सिर्फ उसे बरकरार रखा बल्कि उसमें इज़ाफा भी किया। कई नये मुल्क और इलाके फतह किए। आज़र बाई जान, सैयदना खालिद बिन वलीद रज़ि० के हाथ पर दोबारह फतह हुआ आर्मिनिया को इस्लामी हुकूमत में शामिल किया गया। २७ हिजरी को अब्दुल्लाह बिन साद रज़ि० ने अफरीका पर चढ़ाई की। तराबुलुस, कुबरूस, तबरिस्तान और जुजजान के इलाके फतह हुए। २६ हिजरी में फतूहात का दायरा और भी फैल गया। सैयदना उमर रज़ि० की वफात के बाद कुछ इलाकों ने बगावत कर दी थी। उनको भी दोबारा फतह किया गया। फारिस, मरवा, बल्ख और हरात तक के सारे इलाके फतह कर लिए गए।

तुर्किस्तान, तखार, सीसजान, तालकान, फारियाब, और ज़ुज़जान सख्त लड़ाई के बाद इस्लाम के परचम तले आ गए। यहां तक कि इस्लामी हुकूमत की हदें चीन तक जा पहुंची। सैयदना अब्दुर्रहमान बिन समरा रज़ि० बलूचिस्तान तक आ पहुंचे। उस ज़माने में बलूचिस्तान नाम का कोई सूबा नहीं था। यह सारा इलाका सिन्ध में शामिल था। ईरान और काबुल समेत वह तमाम इलाके भी इस्लामी

हुकूमत में शामिल हो गए जो आज कल अफगानिस्तान और वस्त एशिया का हिस्सा हैं। इस्लामी हुकूमत का रकबा लाखों मुरब्बा मील बढ़ गया।

ईरान में आय दिन बगावत का फितना सर उठा लेता था। उसकी बुनियादी वजह यही थी कि ईरान का आखीरी आतिश परस्त हुकमरां यज़्दगिर्द अभी जिन्दा था। सैयदना उमर फारूक रज़ि० के ज़माने में वह भाग कर तुर्किस्तान चला गया था। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के दौर में वह खरासान और फिर सीसजान पहूंचा इसने दोनों जगह तैयारियां करके मुसलमानों के खिलाफ बगावत की। लेकिन इस्लामी लश्कर ने दोनों जगह इसकी बगावत को कुचल दिया। खुद यज़्दगिंद एक पनचक्की वाले देहाती के हाथों मारा गया। इस के बाद ईरान में अमन व सुकून हो गया।

शाम के वाली सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० ने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० की तवज्जह इस बात की तरफ दिलाई कि हमें हर वक्त रूमियों की तरफ से बहरी हमले का खतरा रहता है। इनके मुकाबिले में हमारी बहरी ताकत का वजूद ही नहीं है। इनसे मुकाबले के लिए हमारे पास बहरी बेड़ा होना चाहिए। इस पर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने बहरी बेड़ा तैयार करने का हुक्म दिया। सैयदना अमीर मुआविया रज़ि० ने मिस्र के वाली अब्दुल्लाह बिन साद के साथ मिल कर अज़ीमुश्शान बहरी बेड़ा तैयार किया। जिसमें कई सौ जंगी जहाज़ शामिल थे।

जहाज़ बनाने का पहला कारखाना मिस्र में कायम हुआ। बहरी

बेड़ा तैयार करके, बहरी फौज की तशकील की गयी। इस बेड़े का निस्फ हिस्सा शाम और निस्फ मिस्र के साहिल पर रहता था। जल्द ही मुसलमानों की बहरी ताकत इस कद्र बढ़ गई कि उन्होंने कबरस के जज़ीरे को फतह कर लिया।

रूम के बादशाह कांस टेन्स ने शाम और मिस्र पर हमले का इरादा किया। वह पांच सौ जंगी जहाज़ों का बेड़ा लेकर इस्लामी सरहदों की तरफ बढ़ा। लेकिन इस्लामी लश्कर ने ज़बरदस्त लड़ाई के बाद इस बेड़े को तहस नहस कर दिया। रूमियों को शिकस्तफाश हुई। इस जंग को मस्तूलों वाली जंग भी कहा जाता है। रूमियों का गुरूर खाक में मिल गया। समुद्री लड़ाई में मुसलमानों की यह जीत सैयदना उस्मान गनी रज़ि० की खिलाफत का एक अज़ीमुश्शान कारनामा है। बहरी बेड़े की इस अज़ीम फतह ने मुसलमानों को बहरे रूम की ज़बरदस्त बहरी ताकत बना दिया। रूमियों की यह शिकस्त इतनी इबरत नाक थी कि फिर तवील अर्से तक रूमियों को इस्लामी मुल्कों पर हमला करने की जुरअत न हुई।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने सैयदना उमर रज़ि० की इस्लाहात को इसी तरह बाकी रखा। सूबों के निज़ाम में भी कोई तबदीली नहीं की गयी। अल्बत्ता चन्द एक छोटी मोटी तब्दीलियां की गयीं।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के दौर में फौज दो किस्म की थी। एक बाकाएदा छावनी में रहने वाली फौज और दूसरी रिज़ाकारों पर मुश्तमिल फौज। यह लोग ज़्यादातर अपने घरों में रहते थे। ज़रूरत

के वक्त उन्हें बुला लिया जाता था। लड़ाईयों में हासिल होने वाले माल में से उन्हें हिस्सा मिलता और इसके अलावा भी उन्हें कई सहूलतें और रिआयतें मिलती थीं। फौजी खिदमत के सिले में जिन लोगों को वज़ाएफ मिल रहे थे आपने इनमें सौ दिरहम का इज़ाफा कर दिया। फौज को बाकायदा एक अलग मुहक्मों की हैसियत दे दी गई। फौजी छावनियां कायम हुयीं फौज की नक्ल व हमल का इन्तिज़ाम बहुत बेहतर बना दिया गया। किसी एक सूबे को फौजी मदद की ज़रूरत पड़ती तो दूसरे सूबों की फौजें बहुत जल्द इसकी मदद को पहुंच जाती।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने रिआया की फलाह व बहबूद के लिए बहुत से इकदामात किए। जिनमें से कुछ यह थे।

मदीने की तरफ आने वाले तमाम रास्तों को अच्छे तरीके से बनवाया ताकि मुसाफिरों को किसी किस्म की कोई तकलीफ न हो। इन रास्तों पर जगह जगह चौकियां बनवाईं, सराय तामीर की। मदीने से कुछ फासिले पर एक बन्द तामीर करवाया, क्योंकि खैबर की तरफ से कभी कभार सैलाब का पानी ईधर आ जाता था, इस तरह मदीने को सैलाब से महफूज़ कर दिया। इस बन्द का नाम ''बन्दे महज़ूर'' है।

पानी का रूख मोड़ने के लिए नहरें भी खुदवाई गईं। पूरे मुल्क में ऊंटों और घोड़ों की परवरिश का बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया। इनके लिए जगह-जगह चरागाहें बनवाईं। इनको सरसब्ज़ रखने के

लिए इनके करीब कुएं खुदवाए, बाज़ चरागाहें इतनी वसी व अरीज़ थीं कि इनमें कई हज़ार ऊंट और घोड़े परवरिश पाते थे। इन चरागाहों के निगरानों के लिए मकानात तामीर करवाये।

नजद के रस्ते पर मुसाफिरों की सहूलत के लिए एक शानदार सराय तामीर करवायी। इसके साथ एक छोटा सा बाज़ार भी बनवाया। आपने जगह-जगह चश्मों के पानी का इन्तिज़ाम किया। सड़कें बनवाईं, नदी नालों और दरयाओं पर पुल बनवाए। मुखतलिफ शहरों में मसाजिद तामीर करवायीं गईं। आपके ज़माने में मरकज़ी बैतुलमाल मदीने में था। इसके अलावा हर सूबे में एक बैतुल माल था। इनसे हकदारों और मुहताजों की मदद की जाती थी। जब नये इलाके फतह हुए और आमदनी में इज़ाफा हुआ तो जिन लोगों को बैतुलमाल से वज़ाएफ मिलते थे उनके वज़ाएफ में सौ-सौ दिरहम का इज़ाफा कर दिया गया। रमज़ानुल मुबारक में बैतुलमाल से एक दिरहम रोज़ाना आम लोगों को मिलता था। जबकि उम्महातुल मोमिनीन रज़ि० को रोज़ाना दो दिरहम दिए जाते थे।

मुकदमात का फैसला करने के लिए बाकायदा काज़ी मुकर्रर किए गए थे। यह काज़ी अपने दौर के बहतरीन आलिम होते थे। उन्हें माकूल तंख्वाहें मिलती थीं। हर फैसला कुरआन व हदीस की रोशनी में किया जाता था। काज़ी किसी भी हाकिम या बाइख्तियार फर्द के दबाव से आज़ाद होते थे। बड़े-बड़े शहर में फतवा देने के लिए मुफ्ती मुकर्रर थे। काज़ी हज़रात अपने मसायल के शरई हल के लिए इनके फतवों से मदद लिया करते थे। खुद सैयदना उस्मान गनी रज़ि०

बुजुर्ग सहाबा की मदद और मुशावरत से हुकूमत चलाते रहे।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने सारी उम्र दीन की खिदमत में सर्फ कर दी। इनकी एक अज़ीम खिदमत यह भी थी कि उन्होंने तमाम मुसलमानों को कुरआन मजीद की एक किरात पर जमा कर दिया। हरम पाक की जगह तंग महसूस हुई तो इर्द गिर्द के मकानात खरीद कर इसमें तौसी कर वादी। खाने काबा पर कीमती गिलाफ चढ़ाने की इब्तिदा भी सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने की। मस्जिदों को खुशबुओं में बसाने का सिलसिला भी आप ही ने शुरू करवाया। सफों को सीधा रखने के लिए आदमी मुकर्रर किए। दीन की दावत फैलाने में आपने हमेशा हद से ज़्यादा दिलचस्पी का मुज़ाहिरा किया।

इन इसलाहात ने इस्लामी सल्तनत को खूब तरक्की और मज़बूती अता की। मुल्क में खुशहाली आयी, हर तरह से तरक्की हुई। लेकिन इन तमाम इस्लाहात के बावजूद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को अपनी खिलाफत के आखरी चन्द सालों में बहुत से मुश्किलात का सामना करना पड़ा। इनकी वजह वह फितने थे जो आपकी खिलाफत को नापसन्द करने वाले लोग बरपा कर रहे थे। यह वह लोग थे जो बज़ाहिर अपने आपको मुसलमान कहते थे। लेकिन वह मुसलमान नहीं थे, मुसलमानों का सा रूप धार लिया था। इनके इस्लाम कबूल करने का सिर्फ एक ही मकसद था कि मुसलमानों के खिलाफ साज़िशें करें, उन्हें आपस में लड़वाकर कमज़ोर करें और इस्लाम की जड़ों को खोखला कर दें।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के खिलाफ चलाई जाने वाली इस मुहिम का सरबराह अब्दुल्लाह बिन सबा था। यह बज़ाहिर मुसलमान था, लेकिन अन्दर से यहूदी मुनाफिक और मक्कार था। इसने लोगों को अपने तकवे और परहेज़गारी से मुतासिर किया हुआ था। जब इसने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के खिलाफ बातें करना शुरू कीं तो लोग इसकी बातों के जाल में आते चले गए। इसने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० और उनके गवर्नरों के खिलाफ लोगों को भड़काना शुरू किया। और इल्ज़ाम लगाया कि सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने अपने रिश्तेदारों को खुश करने के लिए उन्हें बड़े-बड़े ओहदों पर मुकर्रर कर रखा है, बैतुलमाल से बड़ी-बड़ी रकमें ऐसे लोगों को दी हैं जो इनके हकदार नहीं, बल्कि ज़्यादातर रिश्तेदार ही हैं। तराबलस की जंग से जो मालेगनीमत हासिल हुआ उसका पांचवा हिस्सा बैतुलमाल का हक था लेकिन उन्होंने मिस्र के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन साद रज़ि० को दे दिया।

इल्ज़ामात का यह जाल इस कदर महारत से बिछाया गया कि बाज़ नेक दिल और करीबी लोग भी शक में पड़ गए कि कहीं वाकई इन इल्ज़ामात में सच्चाई तो नहीं है। बेचैनी की यह लहर मदीने के लोगों तक जा पहुची। जब सैयदना उस्मान गनी रज़ि० तक यह बातें पहुंची तो उन्होंने लोगों को जमा किया और इन इल्ज़ामात के जवाबात देते हुए फरमायाः

"मैंने इन लोगों को खुश करने के लिए नहीं बल्कि लायक, बहादुर और भरोसे के काबिल समझ कर ऊंचे ओहदों पर मुकर्रर किया है। मैं अपने खानदान वालों से वाकई मुहब्बत करता हूं, लेकिन

इनकी खातिर ज़ालिम नहीं बन सकता। मैं उनके सिर्फ वही हक अदा करता हूं जो वाजिब हैं। उनको दिल खोल कर देता हूं, लेकिन बैतुलमाल से नहीं, अपने ज़ाती माल में से देता हूं। मुसलमानों का माल, मैं अपने लिए हलाल समझता हूं न किसी दूसरे के लिए। तराबलस की लड़ाई में अब्दुल्लाह बिन साद रज़ि० इस्लामी फौज के सिपहसालार थे मैंने उनसे वादा किया था कि अगर आप लड़ाई में कामयाब हुए तो गनीमत के माल का पांचवां हिस्सा आपको दिया जाएगा। फतह के बाद मैंने अपने वादे के मुताबिक यह हिस्सा उन्हें दे दिया। लेकिन जब दूसरे मुसलमानों ने इस बात को पसन्द न किया तो मैंने यह हिस्सा उनसे लेकर बैतुलमाल में जमा करवा दिया। अब इसमें एतिराज़ वाली कौनसी बात रह गई।"

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० पर इसके अलावा एक चरागाह के बारे में भी इल्ज़ाम लगाया गया था। यह चरागाह मदीने के करीब बनाई गई थी। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने इसको हुकूमत की मिल्कियत करार देकर आम लोगों को इससे फायदा उठाने से रोक दिया। इस इल्ज़ाम के जवाब में सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने फरमाया कि मैंने इसमें आम लोगों को मवेशी चराने से नहीं रोका बल्कि इस चरागाह को मुझसे पहले ही सरकारी बना दिया गया था, ताकि सरकारी घोड़े और ऊंट वहां चर सकें। मेरे पास तो सिर्फ दो ऊंट हैं। जो मैंने हज के लिए रखे हुए हैं। खिलाफत से पहले मैं सबसे ज़्यादा ऊंट और बकरियों का मालिक था। अब इन दो ऊंटों के सिवा मेरे पास कोई जानवर नहीं है। मुराद इनकी यह थी कि मैं इस

चरागाह में अपने मवेशी नहीं चराता।

फसाद बरपा करने वालों ने इसके अलावा भी ऐसे इल्ज़ामात लगाए थे। जिनकी सिरे से कोई हकीकत न थी। राई को पहाड़ बना दिया गया था। इन फसादियों का हाल यह था।

वह बात जिसका सारे फसाने में ज़िक्र न था
वह बात इनको बहुत नागवार गुज़री है।

फसाद बरपा करने वालों को सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के जवाबात से कोई गरज़ न थी। वह इनकी तरफ कतअन तवज्जह नहीं देते थे। इनकी तो बस एक ही रट थी कि सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को खलीफा नहीं रहना चाहिए। जब यह लोग अललएलान दूसरों को भी बगावत पर उभारने लगे तो सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने तमाम सूबों के गवर्नरों को मदीना तलब करके इनसे मशवरा किया कि इस फसाद और शोरिश को कैसे खत्म किया जाए? इन लोगो ने राय दी कि फसाद फैलाने वालों को सख्त सज़ाएं दी जाएं, लेकिन यह तजवीज़ सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को पसन्द न आई क्योंकि वह फितरतन नरम मिज़ाज थे। इसके अलावा भी कई मशवरे सामने आये, लेकिन किसी पर भी इत्तफाक न हो सका और सारे गवर्नर अपने अपने इलाकों की तरफ वापस रवाना हो गए।

इनके जाने के बाद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने इस शोरिश से निपटने के लिए तीन इकदाम किए। पहले कूफे के गवर्नर सईद बिन

आस रज़ि० की जगह अबू मूसा अशरी रज़ि० को मुकर्रर फरमाया, क्योंकि कूफे के बागी सईद बिन आस रज़ि० के दुश्मन हो चुके थे। और इन ही के मुतालबे पर अबू मूसा अशरी रज़ि० को गवर्नर मुकर्रर किया गया। चंद सहाबा-ए-किराम को तमाम सूबों में तहकीक करने के लिए भेजा कि लोगों की जायज़ शिकायत क्या हैं। और इनको कैसे दूर किया जा सकता है। पूरे मुल्क में एलान करवा दिया कि जिस किसी को मुझसे या मेरे किसी हाकिम से कोई शिकायत हो वह हज के मौका पर पेश करे। मैं इनकी शिकायत दूर करूंगा और ज़ालिम से मज़लूम को हक दिलाऊंगा। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के इस खुलूस इकदामात के बावजूद साजिशी अनासिर बाज़ न आय। इनकी फितना अंगेज़ी में कोई कमी न आयी। वह अपनी शरअंगेज़ियों से लोगों के दिमाग में बगावत का बीज बो रहे थे। मिस्र, कूफा और बसरा के इन साज़िशियों ने आपस में खुतूत लिख कर मुसूबा तैयार किया कि अचानक मदीना पहुंच कर ज़बरदस्ती तलवार के ज़ोर पर अपने मुतालबात मनवाएं।

इन साज़िशी अनासिर की तादाद हज़ारों में थी। तै शुदा मंसूबे के मुताबिक वह सब एक साथ मदीना पहुंचे। शहर से तीन मील दूर उन्होंने क्याम किया। इनके पड़ाव का मकसद मदीने की फेज़ा को नाहमवार करना था। मदीने के बुजुर्ग सहाबा सैयदना अली रज़ि०, सैयदना तलहा रज़ि०, सैयदना ज़ुबैर रज़ि० और सैयदना साद बिन अबी वकास रज़ि० की जानिब से लोग रवाना किए गए ताकि सैयदना

उस्मान गनी रज़ि० की मुखालिफत के लिए इनको अपने साथ मिलाया जाए। यह इनकी बहुत बड़ी भूल थी। यह शखशियात भला सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के खिलाफ कैसे खड़ी हो सकती थी। वह इनके मकाम व मरतबे से अच्छी तरह आगाह थे। कोई भी सच्चा मुसलमान इनकी तरफ उंगली उठाने का रवादार नहीं था।

सैयदना अली रज़ि० सैयदना उस्मान गनी रज़ि० की तरफ से उन बागियों के पास गए। उन बागियों के एक-एक इल्ज़ाम का मुदल्लल और मुअस्सिर जवाब देकर उन्हें वापस जाने को कहा। सैयदना अली ने बागियो को यह भी यकीन दिलाया कि अमीरूल मोमिनीन सैयदना उस्मान गनी रज़ि० उनके जायज़ मुतालबात मानने के लिए तैयार हैं सैयदना अली की यकीन दिहानी पर सारे बागी वापस जाने के लिए तैयार हो गए उनकी वापसी सैयदना अली और सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के लिए बड़े इतमिनान का बाइस थी। लेकिन यह इतमिनान आरज़ी साबित हुआ।

इस वाकिए को अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि मदीने की गलियां घोड़ों के टापों की आवाज़ों से गुज उठीं। घुड़सवार "इन्तिकाम! इन्तिकाम"! के नारे लगा रहे थे। लोग घबराकर घरों से बाहर निकल आए। उन आंखों से परेशानी झलक रही थी उनकी ज़ेहनों में सवाल था कि यह मिस्री बागी फिर से वापस क्यों आ गए? सैयदना अली आगे बढ़े और उनसे वापस आने का सबब पूछा उन्होंने जवाब दिया कि हम वापस जा रहे थे रास्ते में एक शख्स को देखा जो मदीने से

मिस्र की तरफ जा रहा था। उसकी चाल ढाल और तौर तरीके मशकूक से थे। हमने उससे रोक कर तलाशी ली तो उसके पास एक खत मिला। यह खत मिस्र के गवर्नर के नाम था। लिखने वाले अमीरूल मोमिनीन सैयदना उस्मान गनी रज़ि० हैं। इसमें गवर्नर को हुक्म दिया गया था कि जो लोग मदीने से मिस्र वापस आ रहे हैं उन सबको कत्ल कर दिया जाए। खत पर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० की मुहर भी लगी हुयी थी। हमें फौरन यकीन हो गया कि हमारे साथ धोखा किया जा रहा है। इसलिए इस धोखे के बाद हम सरापा इन्तिकाम बनकर वापस आए हैं।

सैयदना अली ने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० से राब्ता किया और सारी सूरते हाल उनके सामने रखी। सारी बात सुनकर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० शदीद हैरान हुए और कसम खाकर कहाः

"मैंने यह खत लिखा और न किसी से लिखवाया है।"

तब लोगों ने इस राय और ख्याल का इज़हार किया कि यह खत ज़रूर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के मुशीर ने उनकी इजाज़त के बगैर लिखा है।

बागियों तक जब सैयदना उस्मान गनी रज़ि० का मुवक्किफ पहुंचा तो उन्होंने उसे मानने से इंकार कर दिया। क्योंकि वह तो फसाद पर तुले हुए थे। उन्होंने कहाः

"खत चाहे किसी ने भी लिखा हो, इसके ज़िम्मेदार तो खलीफा ही हैं। इसलिए वह खिलाफत से अलग हो जाएं।"

मिस्री बागियों के साथ बातचीत अभी जारी थी कि कूफे और बसरे के बागी भी पलट आए। उनसे पूछा गयाः

"तुम लोगों के रास्ते तो अलग-अलग हैं, फिर तुम किस तरह रास्ते से पलट कर एक साथ आ गए हो।"

उन लोगों ने कोई जवाब न दिया और मिस्री बागियों के गिरोह से जा मिले। बागियों का एक ही मुतालबा था कि सैयदना उस्मान गनी रज़ि० खिलाफत से अलग हो जाएं, लेकिन सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के पास बागियों के लिए एक ही जवाब थाः

"जब तक मुझमें जान है, खिलाफत से अलग नहीं होऊँगा। मैं तुम्हारी हर जाएज़ शिकायत को दूर करने के लिए तैयार हूं। लेकिन तुम्हारे कहने से खिलाफत की कमीज़ नहीं उतारूंगा। इसलिए कि यह कमीज़ मुझे अल्लाह ने पहनाई है। और मुझे रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फरमाया था कि अल्लाह तआला तुम्हें एक कमीज़ पहनाएगा। फिर उसे उतारने के लिए लोग आएंगे लेकिन तुम उसे मत उतारना। लोगो! मैं न तो तलवार के ज़ोर पर खलीफा बना था और न कोई तलवार के ज़ोर पर मुझे खिलाफत से अलग कर सकता है। मैं रसूलुल्लाह स.अ.व. की वसीयत के मुताबिक अखिरी दम तक सब्र करूंगा।"

बागी, सैयदना उस्मान गनी रज़ि० का सब्र व सकून और मुस्तकिल मिज़ाजी देखकर तैश में आ गए और उन्होंने आगे बढ़कर आप के घर को घेरे मे ले लिया। बागियों ने कई दिन तक आपके घर

को घेरे रखा। घेराव के इस अर्से में उन लोगों ने अपनी घटिया ज़ेहनियत का भरपूर सबूत दिया। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के घर में खुराक और पानी बिल्कुल न जाने दिया गया।

एक रोज़ उम्मुल मोमिनीन सैयदा उम्मे हबीबा रज़ि० खाने पीने की कुछ चीज़े लेकर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० तक पहुंचने की कोशिश की, लेकिन उन ज़ालिमों ने उन्हें भी आगे जाने न दिया। सैयदना अली ने पानी की तीन मशकें अपने चन्द आदमी के ज़रिए भेजवाईं जो बागियों से लड़ भिड़ कर और ज़ख्म खाकर पानी की मशकें अन्दर ले जाने में कामयाब हो गए। एक दो बार पड़ोस के घरों से भी खुराक और पानी की मदद पहूंची, लेकिन यह भी न होने के बराबर थी। बमुश्किल एक या दो दिन गुज़र पाते थे।

मदीना मुनव्वरा के बुज़ुर्ग सहाबा मुसलसल उन बागियों को समझाने में लगे हुए थे। लेकिन बागियों को मानना था न माने। खुद सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने बागियों को समझाने की कई कोशिशें की। मकान की छत पर जाकर बहुत मुअस्सिर तकारीर कीं, उन्हें याद दिला दिया कि मस्जिद-ए-नबवी में तौसी के लिए जगह खरीदने वाले के लिए जन्नत की बशारत थी, मैंने यह जगह खरीदी थी, आज मैं इस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ सकता। हिजरत के बाद सारे मदीने में मीठे पानी का एक ही कुआं था। उसको मुसलमानों के लिए खरीद कर आम करने वाले को रसूलुल्लाह स.अ.व. ने जन्नत की खुशखबरी सुनाई थी। क्या तुम नहीं जानते कि यह कुआं मैंने ही खरीद कर मुसलमानों के हवाले किया था। आज तुमने मुझ पर

उसका पानी बन्द कर दिया है। रसूल अल्लाह स.अ.व. के साथ मेरा क्या तअल्लुक था, क्या तुम यह भी नहीं जानते?''

जिसका ज़मीर ज़िन्दा हो, जिसमें ईमान की चिंगारी सुलग रही हो, यह हो ही नहीं सकता था कि ऐसी बातों से उसका दिल न पिघलता, लेकिन यह कैसे पत्थर दिल बागी थे कि उनके दिल इन बातों पर ज़रा भी न तड़पे उन्होंने एक कदम और उठाया, सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के मकान की तरफ आने वाले तमाम रास्तों पर पहरे लगा दिये ताकि मदीने के लोग उनकी मदद को न पहुंच सकें लेकिन इसके बावजूद सात सौ बहादुर मुसलमान हथियार उठाए किसी न किसी तरह सैयदना उस्मान गनी रज़ि० तक पहुंच गए और उनसे कहा:

''अगर आप इजाज़त दें तो हम उन बागियों का मुकाबला करें।''

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० तो खून खराबे के हक में ही नहीं थे। उन्हें रसूलुल्लाह स.अ.व. की पेशगोई अच्छी तरह याद थी। उन्होंने फरमायाः

''मैं तुम लोगों को अल्लाह का वास्ता देता हूं कि कोई शख्स मेरे लिए अपना खून न बहाए।''

इस तरह सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने न चाहने के बावजूद उन लोगों को वापस जाने पर मजबूर कर दिया। सिर्फ चन्द नव जवान जबरदस्ती वहां ठहर गए। शायद उनके ज़ेहन में यह ख्याल था कि लोग सिर्फ उनकी माज़ूली चाहते हैं। उनका सब्र और इस्तेकामत

देखकर खुद भी पीछे चले जाएंगे। इसीलिए वह तमाम मुसीबतें सब्र और शुक्र के साथ बर्दाश्त करते रहे। वह नहीं चाहते थे कि लोग उनकी ज़ात की खातिर एक दूसरे का खून बाहाएं।

यह हज के अय्याम थे। ज़्यादातर लोग हज के लिए मक्का मुकर्रमा गए हुए थे। इस वजह से बागी बेफिक्र थे। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० चाहते तो दूसरे सूबों से अपनी मदद और हिफाज़त के लिए फौज तलब कर सकते थे। लेकिन बाग़ी जानते थे कि वह अपनी नर्म मिज़ाजी के वजह से हरगिज़ फौज नहीं मंगवाएंगे, क्योंकि अपनी ज़ात के लिए दूसरों का खून बहाना उन्हें पसन्द ही नहीं था। इन फसादियों ने इन्हीं बातों का तो फायदा उठाया था। हज के लिए गए हुए लोगों की गैर हाज़री में उनके हौसले बुलन्द किए हुए थे। फिर उन्होंने सोचा कि हज के बाद लोग मदीने वापस आ जाएंगे, फिर शायद वह सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को खिलाफत से दस्तबरदार होने पर मजबूर न कर सकें। चुनांचे वह आपके कत्ल के बारे में गौर व फिक्र करने लगे। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० को भी उनके इरादे का पता चल गया। आप अपने मकान की छत पर तशरीफ ले गए। बागी बदस्तूर घेरा डाले हुए थे। उन्होंने बड़े दुख के साथ बागियों को मुखातिब करके कहाः

''लोगो! तुम मुझे किस जुर्म में कत्ल करना चाहते हो? इस्लाम तीन सूरतों के अलावा किसी मुसलमान को कत्ल करने की इजाज़त नहीं देताः या तो वह इस्लाम लाने के बाद उससे फिर जाए, या शादी के बाद बदकारी करे, या किसी को जान बूझ कर कत्ल करे। अल्लाह

की कसम! मैंने उन तीनों में से कोई गुनाह नहीं किया, फिर तुम मेरे खून के प्यासे क्यों हो गए हो?

बागियों के दिल में ईमान की सच्चाई होती तो उन पर कुछ असर होता उनके दिल पत्थर हो चुके थे, पत्थर को जोंक कैसे लग सकती है। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने उनको समझाने की हर कोशिश की, लेकिन उनकी हर कोशिश राएगां गई। १८ जिलहिज्जा ३५ हिजरी जुमअतुल मुबारक का दिन था कि बागियों ने सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के मकान पर हमला कर दिया। घर के बड़े दरवाज़े पर मना करने के बावजूद हसन बिन अली, सैयदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर, सैयदना मुहम्मद बिन तलहा रज़ि० और कुछ दूसरे नवजवान पहरा दे रहे थे उनके वहम और गुमान में भी न था कि बागी इस तरह दिदह दिलेरी से हमला कर देंगें। फिर भी उन्होंने डट कर मुकाबला किया। ज़ख्म पर ज़ख्म खा के भी बागियों को अन्दर दाखिल न होने दिया। वह दरवाज़े पर बागियों से लड़ रहे थे। इधर चार बागी चुपके से साथ के एक मकान के ज़रिए दीवार छलांग कर सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के मकान में दाखिल हो गए। आप उस दिन रोज़े से थे और कुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे। उन पत्थर दिल बागियों और मुनाफिकों ने इस बात की ज़र्रा बराबर परवाह न की आगे बढ़ कर उन पर एक सलाख नीज़े और तलवार से हमला कर दिया। आप ज़ौज-ए-मुहतरमा सैयदा नाएला रज़ि० बचाने के लिए आगे आयीं तो उन ज़ालिमों ने उन पर भी वार किया और तलवार से उनकी उंगलियां काट दीं ज़ुल्म ने अपना रंग दिखाया

८२ सालह निहत्ते अमीररूल मोमिनीन सैयदना उस्मान गनी रज़ि० शहीद कर दिए गए। उनका खून कुरआने मजीद के इन अल्फाज़ पर गिरा था। ''فسيكفيكهم الله'' यह वाकिया जुमअतुल मुबारक की शाम का था।

सैयदना उस्मान गनी रज़ि० की शहादत की खबर सुन कर लोग सन्नाटे में आ गए किसी को भी अन्दाज़ा नहीं था कि बात यहां तक पहुचं जाएगी। बुज़ुर्ग सहाबा और दीगर लोग इसी ख्याल में थे कि बागी कुछ न कुछ शरायत मनवाकर लौट जाएंगे। अगर कोई बहुत बड़ा और पेचीदा मसला हुआ तो सैयदना उस्मान गनी रज़ि० फौज बुलवाकर उनसे निपट लेंगे। यह शहादत तमाम मुसलमानों के लिए बहुत बड़े सदमें का बाइस थी। इस्लामी सल्तनत का ताकतवर तरीन फर्द बेकसी की हालत में शहीद कर दिया गया था। सैयदना उस्मान गनी रज़ि० ने भूख और प्यास काट कर अपनी जान देकर भी खिलाफत की इस कमीज़ को उतारना पसन्द नहीं किया जो अल्लाह तआला ने उनको पहनाई थी और रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उसे न उतारने की वसीयत की थी। इस मज़लूम शहीद को रात के वक्त बकीउलगर्कद कब्रिस्तान में दफन किया गया।

यह थे सैयदना उस्मान गनी रज़ि० जिन्होंने अपनी तमाम उम्र नेकी और भलाई के कामों में सर्फ कर दी। आप बहुत खूबसूरत थे। हमेशा साफसुथरे कपड़े पहनते थे। तबियत में बहुत ज़्यादा हया थी। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फरमायाः ''फरिश्ते भी उस्मान से हया करते हैं।'' तिजारत में दयानत दारी से बहुत नाम और पैसा कमाया।

लेकिन अपनी दौलत हमेशा अल्लाह की राह में खर्च की सैयदना उस्मान गनी रज़ि० बहुत सफाई पसन्द थे खुशबू बहुत पसन्द करते थे। फर्ज़ नमाज़ों और रोज़ों की सख्ती से पाबन्दी तो करते ही थे, नफली इबादत का भी बहुत इहतिमाम करते थे। अक्सर तीसरे दिन रोज़ा रखते। रात को बहुत मामूली सा खाना खाते। बाज़ अवकात उनकी पूरी रात इबादत में गुजर जाती थी। कुरआन मजीद की तिलावत करना उन्हें बहुत मरगूब था। उनका कोई दिन भी तिलावत के बगैर नहीं गुज़रता था। हर साल हज के लिए जाते थे, आखिरी साल बागियों के मुहासिरे की वजह से नहीं जा सके। आप वह्य की किताबत भी करते थे। कुरआने करीम के बहुत बड़े आलिम और हाफिज़ थे। आपके ज़रिये रसूले करीम स.अ.व. की १४६ अहादीस उन्मते मुस्लिमा तक पहुंची। आप उन दस सहाबा में से एक हैं जिन्हें जन्नत की खुशखबरी रसूलुल्लाह स.अ.व. ने इस दुनिया ही में दे दी थी।

☆☆☆☆☆

अमीरूल मोमिनीन सैयदना उस्मान गनी रज़ि० के चन्द खुबसूरत अकवाल यह हैं:

☆ उसने अल्लाह का हक नहीं जाना जिसने लोगों का हक नहीं जाना।

☆ हकीर से हकीर पेशा इख्तियार करना हाथ फैलाने से बेहतर है।

☆ गरीब का एक रूपये खैरात करना दौलत मन्द के एक लाख रूपये खैरात करने से बेहतर है।

☆ अपने रब के सिवा किसी से उम्मीद न रखो।

☆ गुनाह किसी न किसी सूरत में दिल को बेकरार रखता है।

☆ सबसे बुरा आदमी वह है जो लोगों की बुराईयां करता फिरे।

☆☆☆